ISSN: 2456-947X, Vol. I, Issue. I, June-2017

अनघ

(An International Journal of Hindi Language, Literature and Culture)

संघर्षशील निम्न वर्ग और समकालीन कहानियाँ

डॉ सीमा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री अरविंदो कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ११००१७
ईमेल-sam.jamia27@gmail.com

शोध-सार - बदलते समाजिक- सांस्कृतिक परिवेश में निम्न वर्ग (ग्रामीण मजदूर, शहरी मजदूर, औद्योगिक मजदूर ,किसान आदि) के जीवन -संघर्ष को समकालीन कथा साहित्य में प्रमुखता से उभरा गया है। पूंजीवादी ताकतों द्वारा ग्रामीण व शहरी परिवेश में जीवन यापन कर रहे मजदूर,किसान के शोषण , उनके जीवन -संघर्ष तथा निम्न वर्ग द्वारा शोषणकारी ताकतों के विरोध को समकालीन कथाकारों ने विशेष रूप से रेखांकित किया है।निम्न वर्ग के सांस्कृतिक उत्पीडन , वर्ण भेद जैसी समस्या को आज के जीवन का कलंक मानते हुए यह शोध – पत्र उन बिन्दुओं की पड़ताल करता है जो इस दमनकारी व्यवस्था को अब तक बनाय रखें हैं।

मूल-शब्द : निम्न वर्ग , आम आदमी , संघर्षशील मध्य वर्ग , किसान , मजदूर , समकालीन कहानी।

I. प्रस्तावना

समकालीन कहानी का फलक बहुत व्यापक हैं। इसमें शोषित, पीड़ित, वंचित, गरीब, उपेक्षित, संघर्षशील वर्ग को पूरी जीवंतता के साथ उजागर किया गया है। समकालीन कहानिकारों ने जिस संघर्षरत निम्नवर्ग को अपनी कहानियों में स्थान दिया। वह अपनी आर्थिक, सामाजिक स्थिति के कारण सदैव शोषण, दमन, यातना का शिकार होता रहा है वह आज तक न तो सामाजिक सम्मान हासिल कर सका और न ही कोई विशेष उपलब्धि। निम्न वर्ग छोटी से छोटी चीजों के लिए संघर्ष करता है। आजादी से लेकर अब तक भी निम्न वर्ग की स्थिति में कोई खास परिवर्तन नही हुआ है। आज भी उसे रोजी -रोटी के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है।

समकालीन कहानियों में निम्न वर्ग की उपस्थिति सर्वाधिक है कथाकार कहानी में निम्न वर्ग की स्थिति का चित्रण प्रत्यक्ष रूप से न कर उसकी आर्थिक-सामाजिक स्थिति इस रूप में अभिव्यक्त करता है कि निम्न वर्ग अपनी भयावहता के साथ संपूर्णता में आंखों के सामने चलचित्र की तरह घूम जाता है। निम्न वर्ग जीवन भर शोषण की चक्की में पिसता है उसे अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए जीवन प्रयत्न संघर्ष करना पड़ता है। समकालीन कहानीकार सीधे-सीधे निम्न-वर्ग के जीवन में झाँकता है वह उनके लिए संवेदनशील है। निम्न वर्ग के लोगों के पास आय का कोई ठोस

विकल्प नहीं होता है आर्थिक कमजोरी के कारण वो साधारण जीवन जीने के लिए बाध्य होता है। वे छोटे-मोटे पेशे या मजदूरी से अर्जित आय पर निर्भर होते हैं। उनकी आय इतनी कम होती है कि वो दिन-रात मेहनत करने के बाद भी दो वक्त की रोटी का जुगत नहीं कर पाते। यह वर्ग समाज में उपेक्षित रहता है और जीवन भर वह छोटी से छोटी जरूरत की चीजों को हासिल करने के लिए कठिन संघर्ष करने के लिए विवश रहता है। 'प्रेत मुक्ति' कहानी में संजीव लिखते है कि- "अब चने फाँक-फाँककर, माड पी -पीकर दिन कटने लगे थे जगेसर के। बीमारियाँ आती, बिना दवा-दारु के, प्रतिरोध के निचोड़कर चली जाती। जगेसर फिर टहलने लगता अपनी हाफ पैंट और कमीज पहनकर। मौसम बदलते, लेकिन जगेसर के लिए दुनिया जस की तस पड़ी रहती। जगेसर ने अब यह सिद्धांत बना लिया था कि पूरी कमाई तो पूरा खाना, कमाई नही तो खाना नहीं।"[1]

निश्चित रूप से ग्रामीण वर्ग किसी तरह जोड़-जुगाड़ कर अपना जीवन यापन करते है। एक आम आदमी किसी तरह कच्चा घर बना लेता है तो अगली ही बारिश में वह घर गिर जाता है। अवधेश प्रतीत अपनी कहानी 'उफान' में लिखते है- "गांव पहचान में नहीं आ रहा था। झोपड़िया वह गई थीं कच्ची दीवारें गिर चुकी थीं। घर के घर उजड़ चुके थे। सारे लोग माथे पर हाथ रख कर बैठ गए थे।... लोगों के पास रखा अपना सत्तू-चना भी खत्म हो चुका था। भूख के मारे सबका हाल खराब था। धीरे-धीरे बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया था। सभी एक-दूसरे की तरफ असहाय भाव से देखते। माँएं बच्चों को छाती का दूध पिला-पिलाकर निचुड़ चुकी थीं। आखों में आंसू और आँतों में ऐंठती हुई भूख का भयावह दौर शुरू हो गया था। "[2] संघर्षशील निम्न वर्ग इसी तरह भूखा रह-रहकर निराशा भरी जिन्दगी जी रहा है। शिवमूर्ति अपनी कहानी 'अकालदंड' में अकाल का चित्रण करते हुए लिखते है- "खोराक खींचने से अभी भी पीछे हटने को तैयार नहीं लेकिन। दूर-दूर तक जहां तक दृष्टि जाती है, ऊपर नीला आसमान और नीचे तपते वीरान खेतों के बड़े-बड़े चक। बेवाई की तरह फटी हुई धरती। नंगे ठूठ पेड। पेड़ों के पत्ते सूखकर झड़ चुके है या मवेशियो के पेट में चले गए है। बकरे-बकरी लोगों के पेट में चले गए हैं और गाये भैंसे बिक चुकी हैं। लेकिन बांधकर रखें तो खिलाएं क्या? गले से 'पगहा' खोलकर हांक दे रहे हैं लोग-जाओं 'फिरी' कर दिया आज से। 'सुतंत्र हो। मरने के लिए सुतंत्र। नेह-नाता तोड़ो। चारे पानी की खोज करते मरो। लेकिन दूर जाकर। दुर्गंध से तो बचा दो गांव को। इन फिरी हुए जानवरों को बड़े-बड़े कोयों से आंसू बहाते देखा जा सकता है। मरने का इंतजार पेड़ के ठूंठ पर बैठे गिद्धों को कभी-कभी तीन-तीन चार-चार दिन करना पड़ जाता है।" [3] संघर्षशील निम्न वर्ग को आए दिन किसी-न-किसी रूप में प्राकृतिक आपदा से जूझना पड़ता है और उनका सारा जीवन लाचारी तथा बेबसी में व्यतीत होता है। ऐसी स्थिति में गांव के पशु-पक्षियों की स्थिति भयावह हो जाती है।

समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में यह दिखाया है कि निम्नवर्ग की पारिवारिक आर्थिक स्थिति सही न होने पर बच्चों को भी मेहनत-मजदूरी के लिए बाध्य होना पड़ता है। देखा जाए तो उनके लिए न तो स्कूलों में सम्मानपूर्वक पढ़ने की व्यवस्था है और न ही उन्हें कोई बुनियादी सुविधा मुहैया करायी जाती है। अगर स्कूल है भी तो वह पढ़ने के स्थान पर किसी अन्य कार्य के लिए उपयोग किया जाता है। मधुकर सिंह ने 'माई' कहानी में लिखा है- "गांव में एक प्राइमरी स्कूल था, जिसमें मुखिया का भूसा रहता था। दरअसल स्कूल की दीवारें बाढ़ और बरखा से खराब होकर ढह गयी थी। फिर भी छप्पर राम भरोसे लटका हुआ था। जो हर वक्त चूता रहता था। मुखिया ने एक काम यह किया कि बाँस की थुम्मी गाढ़कर छप्पर को किसी तरह टिकाए रखा था और ऊपर से पलाश और खर-पात बिछा दिया था। बरसात में तो एक तरह से स्कूल बन्द ही रहता। परन्तु रजिस्टर पर स्कूल खुला छोड़ दिया जाता था। अच्छे और सम्पन्न बाबुओं के लड़के दूसरी जगहों में पढ़ते-लिखते थे। इसलिए चिन्तित होने की कोई खास बात भी नहीं थी। गाँव के लड़कों को आवारागर्दी के लिए महज एक अड्डा था। बुरे कामों के लिए भी स्कूल का व्यवहार होता था।"[4] इस तरह निम्न वर्ग के बच्चे अच्छी शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते है। परिणाम-स्वरूप उन्हें आजीवन दूसरों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है। दूसरों पर आश्रित होना उसका स्वभाव या प्रकृति नही होती, बल्कि उसकी मजबूरी होती है। अरूण प्रकाश की कहानी 'भैया एक्सप्रेस' में लिखते है- "दसवी का इम्तिहान खत्म होते ही माई पंजाब जाने-आने के लिए पैसे का इंतजाम करने लगी थी। गांव का कोई आदमी मार-काट की वजह से पंजाब जाकर उसके भैया विशुनदेव को ढूंढने को तैयार नहीं था कई लोगो से मिन्नत करने के बाद, माई रामदेव को ही पंजाब भेजने का तैयार हो गई पैसो की समस्या सांप की तरह फन काढ़े फुफकार रही थी। पुश्तैनी पेशा- अनाज भूनने में क्या रखा है? कनसार में अनाज भुनवाने लोग आते नहीं। मकई की रोटी अशराफ लोग खाते नहीं। दाल इतनी मंहगी है कि लोग चने की दाल बनवाएंगे कि कनसार में चना भुनवाकर सत्तू बनवाएंगे? उस पर इतनी मेहनत-गांव के बगीचों, बंसवाड़ियों में सूखे पत्ते बटोरकर जमा करों, उन्हें जलाकर अनाज भूनकर पेट की आग ठंडी करो। किसी तरह एक शाम का भोजन जुट पाता। आखिर माई उपले थापकर, गुल बनाकर बेचने लगे थी। तब किसी तरह भोजन चलने लगा। लेकिन कोई काम आ पड़ता तो कर्ज़ लेने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता था।"[5] इस तरह से निम्न वर्ग तमाम मुसीबत-परेशानी उठाकर भी अपनी स्थिति सुधारने का संघर्ष करते है पर

वास्तव में वह पहले की तुलना में कही ज्यादा मुश्किलो में उलझ जाते है।

समकालीन कहानीकारों ने निम्न वर्ग के यथार्थ स्थिति को बिना लाग-लपेट के अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। निम्न वर्ग धर्म की रूढ़ियों, रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ है। धर्म, ईश्वर के नाम पर किसान, मजदूर ठगे जाते है निम्नवर्ग की स्थिति सदैव संकटपूर्ण रहती है जब हालात और बुरे हो जाते है जब उच्च वर्ग उनके बाप-दादा का कर्जा जीवन भर बाप से लेता है और उसके मरने के बाद भी उनके परिवार को बंधुआ बना लेता है ' पुतला' कहानी इसका उदाहरण है उदय प्रकाश लिखते है- "पंडित गयादीन चौधरी भजनलाल के जमाने की लाल रंग की टीप वही लेकर बैठे थे। उन्होंने किशनू के बाप ठूनू पासी के द्वारा लिये गये कर्ज का टीपना पढ़ा। किशनू ने कहा, 'लेकिन पंडित, मेरा बाप तो बाईस साल तक यही चौधरी की ड्योढ़ी पर खटते-खटते मर गया। पंडित गयादीन ने आँखे तरेरी और मय सूद के हिसाब लगाया तो सोलह सौ रुपये बैठे। किशनू की तबियत मिर्च हो गयी। उन्होंने ठूनू पासी का निशानी अँगूठा भी कागज पर लगा दिखाया। किशनू के भीतर एक अकबकाहट गुड़-गुड़ हो रही थी लेकिन इतने खूँखार गिद्ध लोगों के सामने कुछ कहते ही देह की खैर नहीं थी। चुप लगा गया।"[6] उच्च वर्ग इस तरह निम्न वर्ग का खूब शोषण करता है।

समकालीन कथाकारों ने शोषित वर्ग की निर्धनता, उसकी फटेहाल जिन्दगी, असुविधायें, तकलीफों को तो उभारा ही है साथ ही किसान को समकालीन व्यवस्था की मजबूरियों के कारण मजदूर बनने को विवश होते हुए दिखाया गया है। 'केक' कहानी में असगर वजाहत दिखातें है कि किसान अब बस सिर्फ सपने ही देखते है कि वो कभी किसान थे- "नीचे सड़क पर बालू वाले ट्रक गुजर रहें है लदी हुई बालू के ऊपर मजदूर सो रहे है जो कभी-कभी किसान बन जाने का स्वप्न देख लेते हैं, अपने गाँव की बात करते हैं, अपने खेतों की बात करते है, जो कभी उनके थे।"[7] मजदूर चाहे जितनी भी मेहनत कर ले, उसे अपनी हालातों से जिन्दगी भर निजात नहीं मिलती है। यही उनकी सबसे बड़ी विंडबना है। वर्तमान कहानीकार व्यवस्था विरोधी स्वर की कहानियों की सर्जना में काफी सफल हुए है। साथ ही वर्ग शत्रुओं के शोषण के तमाम साधनों को बेनकाब करने में भी। इन कहानीकारों ने निम्न वर्ग की यथास्थिति के लिए वर्तमान व्यवस्था को ही जिम्मेदार ठहराया है। वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था में ईमानदारी, मेहनती और सच्चे इन्सान की कोई कदर नहीं होती, ऐसे लोग मुश्किल से पेट भरते है। दरअसल निम्नवर्ग में कुछ जातियाँ ऐसी भी है जो अपना पेट भरने के लिए पशुओं की खाल उतरती है और उन पैसों से अपने परिवार का पालन-पोषण करते है। अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानी 'खाल खींचने वाले' इसका सशक्त उदाहरण है- "दोपहर होते-होते वह आधे बैल को खलिया निकालने में सफल हो गया। लेकिन भूख से उसकी अंतड़ियां अब उलटने लगी थीं और खिचड़ी बालों से भरा हुआ उसका बूढ़ा चेहरा सूखे हुए कद्दू की तरह मुचमुचा गया था। मुनेसर का जोड़-जोड़ टूटने लगा था और जी हो रहा था कि एक बार वह सुस्ता ले। लेकिन वक्त बहुत कम था अभी बैल को पलटना भी था दूसरी ओर खलियाने के लिए अतः रांपी उसने रख दी और बैल को उलटने की कोशिश में जुट गया। एक बार बैल की टांगों को उठाकर उसने चाहा कि लाश को एक झटके के साथ पलट दें, लेकिन क्षण-भर में ही उसे मालूम हो गया कि अब वह पट्ठा शरीर नहीं रहा। भुनेसर बुरी तरह हांफने लगा और सिर थामकर बैठ गया।"[8] इतना मेहनत करने के बाद भी उसे अपने काम का उचित मूल्य नहीं मिलता। वह सोचता है कि उसे इस खाल के पच्चीस रूपये तो मिल ही जाएगें जिससे वो फिर पाँच रूपये तो मालिक हक के दे देगा और बाकी बचे बीस रुपये में वो अपनी पत्नि बसंती के लिए घर का सामान लेकर जाऐगा। लेकिन भुनेसर का यह सपना जल्दी ही टूट जाता है। जब वो इस खाल को मंडी में बेचने जाता है तो मालिक सिर्फ इस पूरी खाल के पंद्रह रुपये देने के लिए मुनीम से कहता है और चला जाता था। भुनेसर पूरी कोशिश करता है बड़े मियां से बात करने की पर बड़े मिया के पीछे इतनी भीड़ थी कि वो उसकी बात ही नहीं सुनते और चले जाते हैं। निम्न वर्ग की सबसे बड़ी बिडम्बना है कि वो कठिन परिश्रम करने के बावजूद अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता। परिमाणतः वह अपनी मूलभूत आवश्कताएं पूरी नहीं कर पाता। वह सदैव जटिल परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ निम्न वर्ग की यथास्थिति बनाये रखते है।

निम्न वर्ग में संघर्ष करने का अदम्य साहस होता है। इसलिए वह आसानी से हार नहीं मानता है और जीवन के अंतिम समय तक संघर्ष करने के लिए तैयार रहता है। निम्नवर्ग अपने जीवन से कभी निराश नहीं होता, जीवन के प्रति सकारात्मक सोच बनाए रखता है। जातीय, क्षेत्रीय, धार्मिक और परम्परागत मूल्यों से संघर्ष जीवन प्रयत्न करता है। यह बात दीगर है कि निम्न वर्ग के जीवन का अधिकाधिक समय संघर्ष में ही बीतता है। उन्हें इस बात का भी आभास है कि उनकी ऐसी स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है। साधन सम्पन्न वर्ग अपनी ताकत का गलत प्रयोग करके निम्न और वंचितों को दबा देते। 'मैत्रेयी पुष्पा' की 'छुटकारा' कहानी में "धन्नो डलिया-खपरा उठाए संडास कमाने चल दी। सबसे पहले डंबर प्रसाद की संकरी गैलरी का रास्ता लिया और पीछे की ओर से मैला सकेरने लगी। ऊपर की मंजिल वाले संडास में चढ़कर किसी ने हगा, गरम-गरम टट्टी छन्नों की बाँह पर गिरी। 'एड, तेरी कफन-काँटी कर लूँ, तेरी....। उसके मुँह से बेतहाशा गाली निकली। पंडितानी सामने आ गई। बोली, 'कफन-काँटी करना अपनी बेटी की'।"[9] अपशब्द और अपमान झेलने पर भी उन्हे मल-मूत्र साफ करना ही पड़ता है

क्योंकि उनके पास कोई और विकल्प नहीं है। वे खुद को असहाय निहत्थे तथा बेबस मानकर अपनी ऐसी स्थिति को अपनी नियति मान बैठते हैं।

निम्न वर्ग की कहानियों में आदमी व्यवस्था से जूझता अधिकतर पाया गया है। आर्थिक विवशताओं से त्रस्त यह वर्ग कभी तो टूटता हुआ, कभी जूझता हुआ, कभी अपनी ही धुन में, मस्ती में झूमता हुआ, तो कभी चाहत पूरी न होने के कारण उद्विग्र व्यवस्था से समझौता कर लेता है तो कहीं उसके प्रति आक्रोश से भर उठता है। इस प्रकार विभिन्न रूपों में वह हमारे सामने आता है।

II. निष्कर्ष

स्पष्ट है कि समकालीन कथाकारों ने संघर्षशील निम्न वर्ग के जीवन तथा उसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक स्थिति का चित्रण बखूबी किया है। कहानीकारों ने अपनी-अपनी कहानियां में स्पष्ट दिखाया है कि निम्न वर्ग किन विषय परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करता है। वह प्रत्येक उस सुविधा से वंचित है जिसका वह सही मायनों में हकदार है। परन्तु वह अपनी बुनियादी जरूरतों को भी पूरा कर पाने में असमर्थ रहा। आजीविका के लिए दर-दर की ठोकरे खाना उसकी नियति बन गई।

संदर्भ

[1] संजीव, 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रकाशक-किताब घर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002, पृ. 47

[2] अवधेश प्रीत, कोहरे में कंदील, प्रकाशक- अंतिका प्रकाशन, सी-56/यूजी एफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-2

[3] शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002.

[4] मधुकर सिंह, 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रकाशक-किताब घर, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, पृ. 93.

[5] अरूण प्रकाश, स्वप्न घर, प्रकाशक- पेगुइन बुक्स इंडिया प्रा. लि. 11 कम्युनिटी सेंटर पंचशील पार्क, नई दिल्ली-110017 पृ. 30.

[6] उदय प्रकाश, दरियाई घोड़ा, वाणी प्रकाशन, 4695-21-दरियागंज पृ.77.

[7] असगर वजाहत, मैं हिन्दू हूँ, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली -110002, संस्करण-2007 पृ. 28

[8] अब्दुल बिस्मिल्लाह, अतिथि देवो भव, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, आवृत -2007 पृ.59

[9] मैत्रेयी पुष्पा, 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रकाशक-किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज पृ. 83